# ।। मदभागी धिग धिगता को अंग ।।

## मारवाडी + हिन्दी

## ( १–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

## || अथ मदभागी धिग धिगता को अंग लिखंते ||

|| साखी ||

**मद भागी संसार मे || सो नर कहिये जोय ||**
**सुणज्यो सब सुखराम के || ज्यां मुख राम न होय ||१||**

अनंत युगोसे हंस आवागमन के चक्कर मे अटका है व अनंत असह्य दु:ख भोग रहा है । इस दु:खसे निकलने के लिये मनुष्य शरीर यह पहली आवश्यकता है । व शरीर प्राप्त करनेके बाद धरतीपे सतगुरु खोजना यह दुजी आवश्यकता है । सतगुरु खोजने के पश्चात सतगुरु का शरणा लेकर घटमे सतनाम प्रगट करना व घटमे पुर्व के छ: व पश्चिम के छ: कमल छेदन कर महासुख का मोक्ष पद पाना यह तिसरी आवश्यकता है । जिवको मनुष्य देह मिल गया व सतगुरु नही खोजा तो उसका मनुष्य देह मिलना धिक्कार है । मनुष्य देह मिला व सतगुरु भी मिल गये परंन्तु सतगुरु का शरणा लिया नही व रामनाम लेकर घटमे सतनाम प्रगट किया नही तो भी उस मनुष्य देहको धिक्कार है धिक्कार है । ऐसे जिव भाग्यहीन है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,कालके दु:ख से निकलने के लिये मनुष्य के मुखमे राम नाम चाहिए । परंन्तु संसार मे मनुष्य देह पाकर मुखमे राम नाम नही लेते है वे सभी नर नारी भाग्यहीन है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी संसार को कह रहे है ।।।१।।

**नर देही नर पाय कर || नांव रटे नही कोय ||**
**तांकु सुण सुखराम के || ध्रग जमारो होय ||२||**

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,नर देह प्राप्त कर रामनाम का रटन नही करते ऐसे नर नारी के मनुष्य देह को धिक्कार है धिक्कार है यह सभी जगतके नर–नारी सुणो । ||२||

**ध्रक ध्रक वा नर देह रे || ध्रक ध्रक वां की जात ||**
**तांमे सुण सुखराम के || नही भजन की बात ||३||**

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि जीस जात मे नर देह प्राप्त कर राम नाम के भजन की बात नही करते आती उस जात को तथा नर देह को धिक्कार है यह सभी जगत के नर नारी सुणो ।।।३।।

**भजन बिना नर फिरत हे || ते नर पशु समान ||**
**हर तजे से सुखराम के || ध्रक पूजे जे आंन ||४||**

जैसे जगत मे कई जीव पशु पक्षी बनके आते है व संसार करते व इधर उधर फिरते है परंन्तु दुर्भाग्यवश काल के दु:ख से उबरने के लिये राम नही ले सकते ऐसे ही जगत मे कई जीव मनुष्य देह पाते व मनुष्य देह पाकर रामनाम ले सकते है परंन्तु लेते नही ऐसे

राम नाम लेते आनेवाले भाग्यवान मनुष्य जीव व न लेते आनेवाले भाग्यहीन पशु पक्षी के जीव एक समान है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी जगतके नर नारी को कहते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जो नर नारी काल से मुक्त करानेवाले हर को त्याग देते है व काल के मुखमे ढकलनेवाले अम्बा,मुम्बा,काली,पितर, भोपा,मोगा,खेतपाळ आदि बली माँगने वाले देवताओको पुजते है उन्हे धिक्कार है धिक्कार है ।।।४।।

**समर्थ को सर्णो तजे ।। गहे आन की ओट ।।**
**तांकु सुण सुखराम के ।। ध्रक लानत हे फीट ।।५।।**

आवागमनसे मुक्त करा देनेवाले समर्थ देवको त्यागकर कालसे घबराकर धुजनेवाले ब्रम्हा, विष्णु,महादेव,शक्ती आदि देवताओका आश्रय लेते है ऐसे सभी नर–नारीको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीयोको सुना रहे है ।।।५।।

**फिको मन हुवे भक्त सुं ।। चर्चा सुंण मुर्झाय ।।**
**ध्रक ध्रक सो सुखराम के ।। हरी गुण सुणे न आय ।।६।।**

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,काल को जीत लिये ऐसे भक्त से मन मे प्रितहीन रहते व उनसे निपजनेवाले अनभै देश के ग्यान की चर्चा सुणकर मुर्झा जाते,दु:खी हो जाते व उनसे हरीका गुण सुणते नही,समजते नही उन्हे धिक्कार है धिक्कार है ।।।६।।

**ध्रक ध्रक वा नर नार हे ।। ज्यारे भक्त न भाव ।।**
**तांकु ध्रक सुखराम के ।। गृह तज बिष को चाव ।।७।।**

जिस नर नारीको रामनाम के भक्तो से प्रेमभाव नही है ऐसे सभी नर नारीको धिक्कार है धिक्कार है। गृहस्थाश्रम त्यागकर साधु बन जाते व साधु बनकर विषयरस पिते ऐसे साधुओको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।७।।

**ध्रक ध्रक वांको जल्म हे ।। गृह तज विषया खाय ।।**
**तांकुं ध्रक सुखराम के ।। जन के पास न जाय ।।८।।**

जिस जिव ने मनुष्य देह मे जन्म लेकर गृहस्थी जिवन अपनाया है व आगे चलकर गृहस्थी जीवन त्यागकर वैरागी साधु बनता है व गृहस्थी वैरागी बनकर गृहस्थीके समान विषय वासना भोगता है ऐसे मनुष्य के जन्म को धिक्कार है । धिक्कार है । जो नर–नारी बैरागी बनकर सतस्वरुपी साधु के पास नही जाते ऐसे नर नारी को धिक्कार है । धिक्कार है ।।।८।।

**मिनष जन्म पाय कर ।। सिंवरे नही जगदिस ।।**
**ता कुं ध्रक सुखराम के ।। लानत बिश्वा बीस ।।९।।**

मनुष्य जन्म प्राप्त कर जगतके सर्व आत्माओका इश्वर है ऐसे जगदीशका स्मरण नही

करता उसे धिक्कार है । धिक्कार है और शत प्रतिशत लानत है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा है ।।।९।।

**घर आश्रम बांध कर ।। संतन पोखे लाय ।।**
**ता कुं ध्रक सुखराम के ।। ध्रक नर जन्म क्हाय ।।१०।।**

आश्रम याने घर बांधकर सतस्वरुपी संतोको अपने घर आदरसे लाकर भोजनप्रसादी नही देता ऐसे मनुष्य जन्मको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ।।१०।।

**आत्म मे परमात्मा ।। ता कुं खोजे नाय ।।**
**वा देही सुखराम के ।। ध्रक ध्रक हे जग मांय ।।११।।**

आदि से हर आत्मा मे परमात्मा है व वह परमात्मा खोजने के लिये मनुष्य देह मिला है परंन्तु उस मनुष्य देह से आत्मामे परमात्मा खोजते नही ऐसे जगतके सभी मनुष्य देह को धिक्कार है । धिक्कार है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।११।।

**प्रमेश्वर सुं प्रीत नही ।। ग्यान उथापे आय ।।**
**ध्रक ध्रक सो सुखराम के ।। गुरू द्रोही जग मांय ।।१२।।**

जगतमे सतगुरु परमेश्वर का ग्यान बताते है परंन्तु सुनणेवाले नर-नारीको उस समर्थ परमेश्वर से प्रिती नही इसलीये परमेश्वर का ग्यान सुणते नही उलटा उस ग्यान का खंण्डन करते ऐसे नर-नारी गुरुद्रोही याने परमेश्वरके द्रोही है यह समजना ऐसे गुरुद्रोहीयोको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।१२।।

**काछ लंपटी ध्रक हे ।। हे ध्रक झूठा क्हे बेण ।।**
**ध्रक ध्रक सो सुखराम के ।। होय नर बिर्चे सेण ।।१३।।**

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो पुरुष-स्त्री लंपट है तथा जो नर-नारी झुठ बोलते है उनको धिक्कार है धिक्कार है आगे सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि जो स्त्री-पुरुष सज्जनता करनेवाले अपने सज्जनो से मायाके मतलब के लिये बदल जाते है ऐसे स्त्री-पुरुष को धिक्कार है धिक्कार है ।।।१३।।

**ध्रक ध्रक ता को जन्म हे ।। बेण पलट होय जाय ।।**
**ता कुं ध्रक सुखराम के ।। वे नर सूंका खाय ।।१४।।**

जो वचन देकर उसे पुरा नही करते व उन वचनोसे बदल जाते ऐसे स्त्री-पुरुष को धिक्कार है धिक्कार है । जो स्त्री-पुरुष न्याय करने मे रिश्वत लेते व रिश्वत लेकर झुठा न्याय देकर अनिती करते ऐसे नर-नारी को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१४।।

**क्रणी कदे न आदरे ।। क्रमा सुं हुंसियार ।।**

**हरी बेमुख सुखराम के ।। से नर सबे गिवार ।।१५।।**

सतस्वरुपी करणीया करना स्विकार नही करते व विकारी कुकर्म करने के लिये हमेशा होशीयार रहते व हरी से बेमुख रहते है वे सभी नर–नारी मुर्ख है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१५।।

**मद भागी संसार मे ।। सुणज्यो अे सब होय ।।**
**भेद बिना सुखराम के ।। क्या मुढ ग्यानी लोय ।।१६।।**

जिसे सतस्वरुप भेद मालुम नही है फिर वह नर–नारी मुर्ख हो या ग्यानी हों ये सभी संसारमे भाग्यहीन है सभी लोग सुन लो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१६।।

**भेष पेहेर हरी नही भजे ।। तां कुं फिट धकार ।।**
**फिट लानत सुखराम  क्हे ।। भेद न लहे गिवार ।।१७।।**

साधु का भेष धारण करते है व सतस्वरुप हरी का भजन नही करते उसे धिक्कार है,फीट है, लानत है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सतस्वरुपका भेद न लेनेवाले सभी भेषधारी साधु गवार है ।।।१७।।

**त्यागी होय ताकीद सुं ।। भजे न अणघड देव ।।**
**तां कुं ध्रक सुखराम केहे ।। निज पद लख्या न भेव ।।१८।।**

मोक्ष पानेके लिये उतावले होकर कुटुंब परिवार को त्यागकर त्यागी बन जाते व त्यागी होकर माया से उत्पन्न हुये देवताओको भजते माया के परेके अनघड देव को नही भजते अनघड देवको न भजने कारण माया मुक्त निजपद का भेद नही पाते । माया के तीनलोक के पद मे अटके रहते ऐसे त्यागीयो को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।१८।।

**सांमी होय सुखराम क्हे ।। जोग न साज्या कोय ।।**
**ता कुं ध्रक सुखराम क्हे ।। भेष लजायो जोय ।।१९।।**

संसार त्यागकर स्वामी हो जाते व स्वामी होकर अनघड स्वामी को जोग नही साधते । त्रिगुणी माया का जोग साधते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसे स्वामीयोने माया का योग धारण कर धारण किये हुये त्यागी के भेष को लजाया है ।।।१९।।

**आठ पहर शिंवरे नही ।। आद पुरष निर्धार ।।**
**सो आयस सुखराम क्हे  ।। ध्रक ध्रक इण संसार ।।२०।।**

घरबार यह माया त्यागकर आयस याने मुद्रा पहने हुये नाथ बनतें व आठो पोहर आदि माया का स्मरण करते है । आयस ने माया त्यागी तो आद पुरुष का निर्धार करके आठो पोहोर स्मरण करना चाहीये था वैसे न करते स्थुल माया त्यागते व काल के मुखमे रखती

उस मूळ माया को पकड्ते । इसलीये आयस बननेपे उस आयस को धिक्कार है धिक्कार है ।।।२०।।

**जंगम होय जाचे नही ।। अविनासी निज देव ।।**
**धक धक सो सुखराम क्हे ।। लहे न आत्म भेव ।।२१।।**

जंगम हो जाते व काल जिसे विनाश करता ऐसे माया के विनाशी देव को भेजते । काल का जो विनाश करता ऐसे जो अविनाश देव आत्मामेही प्रगट है उस अविनाशी निजदेव को नही भजते उसे धिक्कार है । धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते ।।।२१।।

**बेरागी होय ब्रम्ह को ।। ने:चल धरे न ध्यान ।।**
**ता कुं धक सुखराम क्हे ।। गृह तज भुक्ते काम ।।२२।।**

गृहस्थी जिवन त्यागते व बैरागी बनते । बैरागी बनकर बैरागी ब्रम्ह का निश्चल बनकर ध्यान नही करते मुल माया का ध्यान करते व अपनी स्त्री त्यागकर अन्य स्त्रीयोको साथ विषय वासना भोगते ऐसे बैरागीयो को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२२।।

**बेरागी होय राम सुं ।। लिव लगाई नाय ।।**
**गृह तज धक सुखराम क्हे ।। फेर बस्ती मे जाय ।।२३।।**

गृहस्थी जीवन त्यागकर बैरागी हो जाते व माया से मुक्त ऐसे बैरागी राम से लिव नही लगाते व मायासे निपजे हुये देवता से लिव लगाते व अपना घर व अपना गॉव छोड्कर दुजे गॉव मे पर स्त्री के साथ घर बसाते ऐसे बैरागीयो को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२३।।

**जती होय जगदिश कुं ।। तन मन अर्प्या नाय ।।**
**ता कुं धक सुखराम क्हे ।। तज उलटा विष खाय ।।२४।।**

तन मन से स्त्री से घृणा कर अलग होकर जती बन जाते व जो अस्सल जती है उस जगदीश को तन मन अर्पण न करते उलटा मुल मायामे तन मन लगाते व अपनी स्त्री त्यागकर अन्य स्त्रीयोके साथ विषय रस खाते ऐसे जती को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२४।।

**ब्राम्हण होय कर ब्रम्ह को ।। भेद न जाणे कोय ।।**
**धक धक सो सुखराम केहे ।। नांव लजावे जोय ।।२५।।**

ब्राम्हण होकर सतस्वरुप ब्रम्हका भेद नही जाणते । मुल त्रिगुणी मायामे रचे मचे रहते मुखमे ब्रम्ह जाणेगा वही ब्राम्हण ऐसा कहकर अपने आपको ब्राम्हण नामसे समजते ऐसे ब्राम्हण, ब्राम्हण इस नामको लजाते ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२५।।

**ब्राम्हण के घर जन्म रे ।। भजन ब्रम्ह को नाय ।।**
**ता कुं धक सुखराम क्हे ।। ब्रम्ह कुवायो काय ।।२६।।**

ब्राम्हण के घर जन्म लेता व जो असली ब्राम्हण है ऐसे सतस्वरुप ब्रम्ह को नही भजता व स्वयंम को ब्राम्हण के घरमे जन्म लिया इसलीये ब्रम्ह कहलाता व सभी क्रिया करणी त्रिगुणी मायासे उपजे हुये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव आदि देवता की करता ऐसे ब्राम्हण के घरमे जन्मे हुये स्वयंम ब्रम्ह कहलाने वाले ब्राम्हण को धिक्कार है धिक्कार है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।२६।।

**ग्यानी होय के ग्यान की ।। राह चले नही कोय ।।**
**धक धक सो सुखराम क्हे ।। नीत पलट हुवे लोय ।।२७।।**

ग्यानी होकर ग्यान के राह से नही चलते । अपना स्वार्थ आते ही ग्यान की राह त्याग देते व पलटी हुयी निच राहसे चलते ऐसे ग्यानी लोगोको धिक्कार है धिक्कार ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२७।।

**पन्डत होय निर्पक्ष की ।। करे न चर्चा आय ।।**
**धक धक सो सुखराम क्हे ।। जग स्वावत केह जाय ।।२८।।**

निरपक्ष सिर्फ सतस्वरुप देव है । वह अनघड देव है । वह आदिसे सभी आत्मामे सुख देनेके लिये प्रगट है । ऐसे सभी आत्मामे प्रगट है ऐसे देव की पंण्डीत बनने पे पंण्डीत चर्चा नही करता व अलग-अलग लोगोने अपने अपने मनसे माने हुये कालके जबडे मे फसे हुये देवोकी चर्चा करता ऐसे पंण्डीत को धिक्कार है धिक्कार है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ये पंण्डीत जगत के जीव को जिसमे अपना स्वार्थ नही निभेगा ऐसा परमार्थ का ग्यान नही कहता व अपने चंद स्वार्थ के लिये अभितक मन जिस मायाके सुखोमे लुभाये जाता था व जाता है ऐसा काल के मुख मे रखनेवाले ग्यान को कथता इसलीये ऐसे पंण्डीतो को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२८।।

**धक ग्यानी धक भेष सो ।। जे हरी रत्ता नाय ।।**
**धक दुनिया सुखराम कहे ।। से पूजण नही जाय ।।२९।।**

ग्यानी,पंड्ति,ब्राम्हण,जती जंगम,सेवडा,बैरागी आदि भेषधारी जो जो हरी मे लिन नही हुअे उन सबको धिक्कार है । धिक्कार है तथा ऐसे सभी भेषधारी व दुनिया के सभी नर-नारी को भी धिक्कार है जो सतस्वरुपी साधु को पुजते नही ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२९।।

**नो निधका बासा हुवे ।। अन धन अखत अपार ।।**
**बिण सिंवरण सुखराम क्हे ।। धक धक जन्म गिवार ।।३०।।**

घटमे नवनिधीका वास है याने अन्न व धन अपार है कथे नही जाते इतना है परंन्तु

रामनाम का स्मरण जरासा भी नही है ऐसे गवार नर नारी के जन्म को धिक्कार है धिक्कार है ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।३०।।

**बुध भारी हिमत घणी ।। बडी अकल तन माय ।।**
**ता कुं ध्रक सुखराम क्हे ।। समझर शिंवरे नाय ।।३१।।**

हर चिज समजने के लिये बुध्दी भारी मिली है व कोई भी चिज पानेकी हिम्मत बहोत है ऐसी तनमे बडी अक्कल व हिम्मत होने कारण सतस्वरुप राम का स्मरण करना है यह समज गया है फिर भी स्मरण नही करता ऐसे अक्कल वाला हिमती पुरुष को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।३१।।

**जाण बुझ हर जो तजे ।। ता कुं फिट ध्रकार ।।**
**आघो हुय सुखराम क्हे ।। पीछे पडे गिवार ।।३२।।**

रामजी को समज गया व जाणकर रामजी का स्मरण भी करता है व ऐसा स्मरण करनेमे आगे आगे भी रहता परंन्तु कुछ समय बाद समजनेके बाद भी पिछे हटकर जाण बुझकर बिचमे ही स्मरण करना त्याग देता ऐसा मनुष्य गवार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ऐसे गवार मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है ।।।३२।।

**च्रचा सुण मन प्रगळे ।। अग्या लीजे जाय ।।**
**ध्रक ध्रक सो सुखराम क्हे ।। ढील करे घर आय ।।३३।।**

केवली संतोसे महासुखके पदकी चर्चा सुणता व मन मायासे निकलकर सतस्वरुपमे लगता व सतस्वरुप पानेकी चाहणासे सतगुरु से आज्ञा भी लेता व घर जानेके बाद आलस करता, ढिलाई बर्ताता ऐसे मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।३३।।

**हर की भक्त संमावता ।। डिग पच गोता खाय ।।**
**ध्रक ध्रक सो सुखराम क्हे ।। प्रखर लोप्या जाय ।।३४।।**

हर की भक्ती परख ली परंन्तु धारण करनेमे मन करडा नही बनाता,डिग पिच डिग पिच होकर करु या ना करु ऐसे गोते खाता ऐसे मनुष्यको भक्ती परखनेके बाद भी धारण नही करता इसलीये धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।३४।।

**आगो पीछो होय रयो ।। अग्या लूं के नाय ।।**
**ता कुं ध्रक सुखराम क्हे ।। हरी दिस गोता खाय ।। ३५ ।।**

सतगुरु का शिष्य बननेमे आगे पिछे होता याने सतगुरु की आज्ञा लु या नहि लु इस सोचमे रामजी की दिशामे जानेमे करडा न बनते गोते खाता ऐसे मनुष्य को धिक्कार है फिट है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।३५।।

**डरतो इण संसार सुं ।। अग्या लहे न कोय ।।**

**ता कुं फिट धकार हे ।। कहे सुखदेवजी तोय ।।३६।।**

सतगुरुके ग्यानको मानता परंन्तु संसार क्या समजेगा,घरके लोग क्या कहेंगे नन्नीहाल परिवार क्या समजेगा इसका डर रखता इसलीये ग्यान समजकर भी आज्ञा नही लेता ऐसे नर नारी को धिक्कार है धिक्कार है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।३६।।

**च्रचा सुण आरे करे ।। पत समावे नाय ।।**
**ता कुं ध्रक सुखराम कहे ।। प्रखर लोप्या जाय ।।३७।।**

संत जनोकी ग्यान चर्चा सुणकर ग्यान उँचा है यह अंतरमे समजता उस ग्यानके सुखके पहुँचका विश्वास भी अंतरमे आ जाता फिर भी धारण नही करता ऐसे ग्यान परखकर धारण न करनेवाले नर–नारीको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते । ।।३७।।

**राम नाम ऊपदेस रे ।। या कुं कहे फितूर ।।**
**ता कुं ध्रक सुखराम क्हे ।। वां मुख पडसी धूर ।।३८।।**

जो रामनाम का उपदेश करते है ऐसे उपदेशीयोको सागट लोक फेल फितुर ढोंगी कहते है व रामनाम के उपदेश को उथाप देते है ऐसे सागटोको धिक्कार है धिक्कार है तथा उनके मुखमे विष्ठा समान गंधी गंधी धुल पडेगी ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।३८।।

**राम नांव आरे करे ।। ओ पद आद अनाद ।।**
**ध्रक वा कुं सुखराम क्हे ।। रटे जना सूं बाद ।।३९।।**

रामनाम को सब नामो मे उँचा पकड्ते व आद अनाद से इसी रामनाम से सभी का उध्दार हुवा ऐसा भी मंजुर करते परंन्तु इसी रामनाम रटनेवाले संतोसे काल के मुखमे रखनेवाले माया नाम को बडा पकड्कर वाद विवाद करते ऐसे विवाद करणेवाले नर–नारी को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।३९।।

**रटे जना कूं झूट कहे ।। राम नाव सत्त होय ।।**
**ता कुं ध्रक सुखराम क्हे ।। सुणो सिष्ट के लोय ।।४०।।**

रामनाम सत है ऐसा बजा बजाके कहते व वही रामनाम रटनेवालें संतोको झुठे कहते,ढोंगी कहते ऐसे नर–नारी को धिक्कार है धिक्कार है यह सभी सृष्टीके लोक सुण लो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।४०।।

**आप न देख्या देस वो ।। सुण सुण अडे गिवार ।।**
**ता कुं ध्रक सुखराम क्हे ।। सीखर होय खवार ।।४१।।**

खुद ने पिंड्मे संत जनोका देश देखा नही व अन्य संतोकी वाणी सुण सुणकर देश देखे हुये अनुभवी संतोके साथ अड्ता है झगड्ता है ऐसे गवारको धिक्कार है धिक्कार है ।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि अनुभवी संत का ग्यान समज न लेते,बाचे सिखे हुये ग्यान के आधार पे अड्ते ऐसे मुर्ख मनुष्य अपने मनुष्य देह की खराबी करते । यह सभी स्त्री–पुरुष सुण लो ।।।४१।।

**साखी सब्दी सीख कर ।। अडे संत सुं कोय ।।**
**ता कुं ध्रक सुखराम क्हे ।। गयो जमारो खोय ।।४२।।**

अमरलोकमे पहुँचे हुये संतकी वाणी,साखी,शब्द सिख सिखकर कुछ लोक सतस्वरुप प्रगट रुप से प्रगटा है ऐसे संतोसे अड्ते ऐसे मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है । ऐसे मनुष्योने अपना हिरा सरीखा मुस्कील से पाया हुआ मनुष्य तन गमा दिया ऐसा जगत के सभी नर–नारीयो समझो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।४२।।

**अर्थ भेद जाण्या बिना ।। थाप उथापे कोय ।।**
**ध्रक वा कूं सुखराम क्हे ।। सिख ग्यान जन होय ।।४३।।**

सतस्वरुप का भेद पाये बिना सतस्वरुप पाये हुये सच्चे संतोका ग्यान खंण्ड्न मंड्ण करते है व पिछ्ले हुये संतोके ग्यान को सिख सिखकर पिछ्ले संतोके समान संत बनना चाहते ऐसे बिना पाये हुये मनुष्योको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ।।४३।।

**साचा जन कूं उथपे ।। अडग बडग करे ग्यान ।।**
**ता कूं ध्रक सुखराम क्हे ।। परख करे न आन ।।४४।।**

जो बंकनाळ से चढकर दसवेद्वार पहुँचे हुअे सच्चे संत है व उनको समजके परखता नही उनके अनुभवोको व ग्यान को झुठा ठहरता है व अपने मन से व मतसे अड्ग बड्ग याने भर्मोसे भरा हुआ ग्यान याने जिसमे केवल का जरासाभी नामो निशाण नही ऐसा ग्यान कथता है इसलीये ऐसे नर–नारी को धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।४।।

**जोड जोडकर क्हेत हे ।। साखी शब्द बणाय ।।**
**ध्रक मीन्डे सुखराम क्हे ।। जे अणभे सूं लाय ।।४५।।**

अणभे देश देखा नही है व मनसे ही साखी शब्द जोड जोड्कर सच्चे संतोके अणभे देशके शब्द वाणी समान बनाकर सच्चे संतोके वाणी शब्द के बराबरी मे मांड्ता है ऐसे मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।४५।।

**बेहद की बाताँ कहे ।। साध समाधी गाय ।।**
**ता कुं ध्रक सुखराम क्हे ।। चारण जेसा ठेराय ।।४६।।**

बेहद याने समाधी मे पहुँचे हुअे साधुओकी अच्छे सुरोमे पद साख्या गा गा कर जगत को सुणाता है व गाणेवाले मनुष्य स्वयंम् को बेहद का साधु समजकर बैठता है इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ये नर बेहदी साधु नही है । यह जगत बराबर का

मनुष्य है व जगतमे इतीहास मे घडे हुये राजा लोकोके बखाण करणेवाला जैसे चारणभाट होते ऐसा इतिहास मे हुये वे संतो का बखाण करणेवाला चारणभाट है । जगतमे घडे हुये संतोका बखाण करता है परंन्तु स्वयंम् इतिहास मे बने हुये संतो समान बनने की विधी खोजता नही इसलीये ऐसे नर को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ।।४६।।

**जे पूंता समाध घर ।। मिल्या ब्रम्ह मे जाय ।।**
**वा जन कूं सुखराम क्हे ।। ध्रक माने नही आय ।।४७।।**

जो संत समाध घर याने सतस्वरुप ब्रम्ह के घर जाकर सतस्वरुप ब्रम्ह समान बनता है ऐसे संतको जो नर नारी मानते नही उनके मनुष्य जन्म को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।४७।।

**हरजन चढ अस्मान मे ।। बोलत निर्भे ग्यान ।।**
**ता कूं ध्रक सुखराम क्हे ।। जे नही करे बखाण ।। ४८ ।।**

जो हरिजन समान अस्मान मे चढकर हरीके देश का निर्भय याने काल के भय के परेका ग्यान जगत मे कथते है ऐसो हरिजन की पहुँच सुणणे पे भी जो नर नारी उस हरिजन की महिमा नही करते है उनके मनुष्य जन्म को धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।४८।।

**इत ऊत अंछर लाय कर ।। साखी कहे बणाय ।।**
**ता कूं ध्रक सुखराम क्हे ।। जन होय बेसे आय ।।४९।।**

इतिहास मे घडे हुये ने अं:छरी न्याने न्याने संतोकी अपने माया मतसे उनके व अपने अक्षर जोड जोड्कर साखीयॉ कविता बनाता है व जगतमे उन संतोके समान संत बनकर बैठ्ता है ऐसे नर नारी को धिक्कार है । धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।४९।

**शब्द भेद जाणे नही ।। साख कवत केहे जोड ।।**
**ता कूं ध्रक सुखराम क्हे ।। रहे जनासू तोड ।।५०।।**

संत के समान ने अ:छर का भेद जाणता नही व अपने तुच्छ बुध्दीसे ने:अंछ:री संत के समान साखीयॉ कविता जोड्ता है व अनुभवी संत से तुटकर अपना अलग से पंथ चलाता है ऐसे मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ।।५०।।

**कवत साख अेसी क्हे ।। जैसी कही कबीर ।।**
**ध्रक वां कू सुखराम क्हे ।। सिष्ट बांध के बीर ।।५१।।**

जगत मे कबीर साहब ने:अंछरी संत सन १४५० के करीब हुये । वे अमरलोक मे सिधाये

उनके मुखसे कथी हुयी कवीत सांख जगतमे पिछे रही है । ऐसी कबीर साहब की तथा कबीर साहब सरीखी कवीत साख बना बनाकर कोई मनुष्य जगत मे कहता है । वह मनुष्य सृष्टी मे जैसे कोई मनुष्य पेट भरनेके लिये शस्त्र बांधकर विर पुरुष समान सोंग बनाता है व जगतमे सोंग ले लेकर फिरता है ऐसा कवित साख बनानेवाला मनुष्य कबीर साहब का सोंगी मनुष्य है ऐसे मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।५१।।

**पूंथा बिन बाणी कहे ।। ता कूं फिट धरकार ।।**
**छायां ले सुखराम क्हे ।। कथणी कथे गिवार ।।५२।।**

समाधी घटमे पहुँचे बिना संतोकी वाणी पढ पढकर समाधी संत के समान संत बनकर वाणी कहता है उसे फिर धिक्कार है । ऐसे जो जो मनुष्य संतोके वाणीका आसरा लेकर वाणी कथते है वे मुर्ख है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।५२।।

**षट कंवळ पुर्व दिसा ।। छे पिछम का खोल ।।**
**गढ पर चढ सुखराम क्हे ।। अणभे बायक बोल ।।५३।।**

घटमे छः पुर्वके कमल छेदकर पश्चिम के रास्तेसे उलटकर पश्चिम का रास्ता खोलता है व पश्चिमके रास्ते के छःकमल छेदन कर दसवेद्वार के गढपर चढता है व कालके भयसे रहित वचन बोलता है वह संत धन्य है धन्य है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ।।५३।।

**द्वादस कंवल न छेदिया ।। उलट चढया नही कोय ।।**
**ता कूं ध्रक सुखराम क्हे ।। शब्द कहत हे जोय ।।५४।।**

घटमे बारह कमल छेदन कर उलटकर उलटा दसवेद्वार मे गढपर नही चढा व दसवेद्वार मे चढे हुये संतो के समान शब्द अन्य संतो के बताये हुये ग्यान को देख देखकर कहता है उसे धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।५४।।

**पहुँच्या बिना बाणी करे ।। निर्भे शब्द उचार ।।**
**ता कूं ध्रक सुखराम क्हे ।। आगे पडसी मार ।।५५।।**

निर्भय देश पहुँचे बिना निर्भय देश के शब्द उच्चारण करता है व निर्भय देश का संत बन गया ऐसा अपने मत से ही मान लेता है ऐसे मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ऐसे मनुष्य पे शरीर छुटनेपे यम का मार पडेगा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।५५।।

**भजन बंदगी भेद नही ।। साखां कहे अनेक ।।**
**ता कूं ध्रक सुखराम क्हे ।। फूस पिछाटे देख ।।५६।।**

साहेब की भक्ती भजन कैसे करना यह विधी मालुम नही व घटमे साहेब प्राप्त किये हुये संतोकी सांखा याद कर कर घटमे साहेब मिलेगा इस आशासे साहेब पाये हुये संतोकी

सांखा याद करते रहता व उन सांखाओमे लिन होकर रहता व सोचता की मुझे सांखा याद करनेसे साहेब मिलेगा इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि वह मनुष्य क्षुधा निवारणार्थ के लिये क्षुधा निवारणार्थ लगनेवाले दाने जिसमे नही ऐसे फुसको दाने पाने के लिये फटकने समान है ऐसे मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है ।।।५६।।

**दत्त गोरख के शब्द को ।। बूझ्यां अर्थ न होय ।।**
**ता कूं ध्रक सुखराम क्हे ।। निर्भे बोलत जोय ।।५७।।**

दत्तात्रेय व गोरखनाथ के बनाये हुये शब्द गाते रहता व उन शब्दोकी पहुँच कहा तक है यह पुछनेपे पहुँच बता नही सकता व दत्तात्रेय व गोरखनाथ कालके परे पहुँच गये है यह अपनी समज बनाकर मै भी दत्तात्रय व गोरखनाथ के समान निर्भय हो गया व अब मुझे काल कभी नही खायेगा यह समजता । जब की सतविज्ञान ज्ञान के समजसे दत्तात्रय व गोरखनाथ दोनो पारब्रम्ह कालके मुखमे बैठे है ये काल से मुक्त हुये नही यह दत्तात्रय व गोरखनाथ के शब्द से समजता ऐसे झुठ निर्भय बननेवाले मनुष्यको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।५७।।

**घट माही अस्थान हे ।। बूज्यां कही न जाय ।।**
**ता कूं ध्रक सुखराम क्हे ।। क्हे प्रचे की लाय ।।५८।।**

घटमे कंठमे सरस्वती,हृदयमे महेश पार्वती,नाभीमे विष्णु लक्ष्मी ऐसे सभी बारा स्थान प्रगट किये नही व संतोके घटके पर्चे बाच बाचकर घटमे स्थान देखे हुये संतोके समान अनुभवी बनकर जगतमे रमते रहता व शिष्य घटमे स्थान पुछनेपर प्रगट करा नही सकता ऐसे झुठे मनुष्यको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते ।।।५८।।

**बूज्या अर्थ न ऊपजे ।। क्हे ठांव चे साख ।।**
**ता कूं ध्रक सुखराम कहे ।। शब्द छाया ले भाख ।।५९।।**

बिना अनुभव लेने कारण शिष्यके पुछनेपे घटके स्थानो की सही रचना शिष्यको बता नही सकता परंतु शिष्यके पुछनेपे स्थानो की रचना बताने के लिये अनुभवी संतोकी साखीयाँ बोलता व अनुभवी संतोका आसरा लेकर स्वयंम् अनुभवी संतो के समान साखीया बोल बोल कर बर्ताव करता ऐसे बर्ताव करनेवाले मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।५९।।

**साकी शब्दी क्हे रहयो ।। बिना अर्थ बिचार ।।**
**साखां क्हे सुखराम क्हे ।। सो जड बडो गिवार ।।६०।।**

मर्म समजे बिना आदि हुये वे संतोकी साखीयॉ व शब्द गाता व किसीने साखीका मर्म पुछा तो साखी का मर्म बता नही सकता ऐसे मनुष्य के बुध्दी भारी जड है तथा वह मनुष्य बडा गवार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है ।।।६०।।

**पार ब्रम्ह की भक्ति बिन ।। ध्रक क्रणी करतुत ।।**

**धक मंत्र सुखराम क्हे ।। जे हरजी बिन सूत ।।६१।।**

अच्छी अच्छी करणीयाँ व करतुत करता है परंतु सतस्वरुप पारब्रम्ह की भक्ती प्राप्त नही करता ऐसे मनुष्य के अक्कल को धिक्कार है धिक्कार है । जिस मंत्र से हरी मिलता नही ऐसे भारी भारी मंत्र जपता व हरी पाने का मंत्र जपता नही ऐसे मनुष्य के अक्कल को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।६१।।

**सुणज्यो सब साची कहूँ ।। मोय सतगुर की आण ।।**
**केवळ बिन सुख राम क्हे ।। सब ही झूट बखाण ।।६२।।**

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज शपथ लेकर जगत के नर नारीयो को कह रहे कि कैवल्य भक्ती के बिना सभी मंत्र,जाप,करणीया,कर्तुत व इन समान सभा मायावी विधीयाँ काल के दु:ख से मुक्त होनेके लिये झुठ है यह सत्य है यह कहनेमे जरासाभी झुठ नही है यह सुणो । ।।६२।।

**तीन लोक सूं जे रत्ता ।। क्या नर नारी देव ।।**
**धक धक सो सुखराम क्हे ।। पार ब्रम्ह बिन सेव ।।६३।।**

सतस्वरुप पारब्रम्ह की भक्ती छोड्कर तीन लोगोके देवताओ मे तथा तीन लोगोके देवताओकी भक्ती बतानेवाले साधु साध्वीयोमे जो रचमच गये उन सभी नर नारीयो को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।६३।।

**धक धक सो ये पांव हे ।। द्रसण कदे न जाय ।।**
**नेंण धक सुखराम क्हे ।। रूप न निर्खे आय ।।६४।।**

जो पैरो से चलकर सतस्वरुपी गुरु व साधुओकी दर्शण करने नही जाता उन पैरो को धिक्कार है धिक्कार है तथा जो आँखे सतस्वरुपी गुरु व साधुओके दर्शन नही करने जाती उन आँखोको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते ।।।६४।।

**धक हात गुर टेल बिन ।। धक कान वे होय ।।**
**हर चर्चा सुखराम क्हे ।। चित कर सुणी न कोय ।।६५।।**

जो हाथासे सतस्वरुपी गुरुकी व साधुओकी सेवा नही करता ऐसे हाथो को धिक्कार है धिक्कार है तथा अपने कानोसे चित्त देकर हरी चर्चा नही सुणता ऐसे कानोको धिक्कार है धिक्कार है ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।६५।।

**धक धक बुध वा अकल हे ।। म्हेमा करे न आय ।।**
**धक मनसो सुखराम क्हे ।। गुर सूं मिले न जाय ।।६६।।**

अक्कल याने बुध्दी विशाल है फिर भी सतस्वरुपी सतगुरुकी महीमा अपने बुध्दीसे नही करता ऐसे बुध्दीको धिक्कार है धिक्कार है मन सबसे मिलनसार है फिर भी सतस्वरुपी सतगुरु व साधुओकी मिलने को नही जाता ऐसे मन को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।६६।।

**ध्रक जिभ्या मुख रसना जां की ।। नाव रटे नही कोय ।।**
**ध्रक मत सो सुखराम क्हे ।। गुर ध्रम पत न होय ।।६७।।**

जो मुख जिभ से रामनाम नही रटता उसके मुख एवम जीभ को धिक्कार है धिक्कार है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि जीस के मत मे सतस्वरुपी गुरु धर्म नही है ऐसे मन को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।६७।।

**ध्रक ध्रक खाली जात हे ।। नांव बिणा दम कोय ।।**
**ध्रक दिन्न सुखराम क्हे ।। ता दिन भजन न होय ।।६८।।**

जो श्वास नाम लिये बिना खाली जाता है ऐसे खाली जानेवाले दम को धिक्कार है धिक्कार है । जिस दिन राम नाम का भजन नही होता ऐसे दिनको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।६८।।

**ध्रक ध्रक वा पोर पल ।। नांव बिसारे सोय ।।**
**ध्रक दहाडो सुखराम क्हे ।। हरी जन मिले न कोय ।।६९।।**

जीस पोहर पल मे रामनाम लेनेका भुल जाता है उस पोहोर पल को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जिस दिन हरीजन से मिलना नही होता या हरिजन नही मिलते उस दिनको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।६९।।

**ध्रक ध्रक वांको धन हे ।। गुर नही पूज्या लाय ।।**
**ध्रक मस्तक सुखराम क्हे ।। च्रण निवायो नई आय ।।७०।।**

घरमे धन अपार है ऐसा अपार धन होनेके पश्चात भी सतगुरु को घर लाकर आदर सत्कार नही करता ऐसे धन को धिक्कार है धिक्कार है । जिसने अपना मस्तक गुरु के चरणो मे नवाया नही तो उसके उस मस्तक को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।७०।।

**ध्रक ज्यांको धन माल हे ।। ध्रक बगतावर होय ।।**
**सत्तगुर की सुखराम क्हे ।। म्हेमा करी न कोय ।।७१।।**

जिसके पास धन माल बहुत सा है व उस धनमाल का उपयोग कैसे लेना उसका एक मात्र धनी भी वही है । मतलब धनमाल का उपयोग क्या किया यह पुछनेवाला घरमे कोई नही है फिर भी अपने गुरुको घर लाकर परमात्मा को भायेगी ऐसी महिमा नही करता ऐसे धनको व धनके धनीको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।७१।।

**ध्रक तन मन माल सो ।। ध्रक सुख संपत होय ।।**

**सत्तगुर कूं सुखराम क्हे ।। अर्पण करी न कोय ।।७२।।**

जिसने अपना तन मन धन माल सुख संपदा अपने सतगुरु को अर्पण नही किया मतलब सतगुरु के जरुरतवाले उपयोग मे नही लाया ऐसे नर के तन मन धनमाल व सुखसंपदा को धिक्कार है धिक्कार है तथा उस नर को भी धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।७२।।

**ध्रक दाता ध्रक सूर्वा ।। हरी गुर सामा नाय ।।**
**ध्रक किमत सुखराम क्हे ।। मन नही पकडयो जाय ।।७३।।**

कोई मनुष्य जगत के लिये दाता है परंतु हरी सामील तथा सतगुरु कार्यमे दाता तथा शुरविरता से नही रहता ऐसे मनुष्यके दाता व शुरविरता को धिक्कार है धिक्कार है । जो मनुष्य जगत के नर नारीका मन पकड्नेमे हिकमती है परंतु सतगुरुका मन पकड्नेमे कभी जरासी भी हिकमत नही लगाता ऐस हिकमत को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।७३।।

**हरी बिन चर्चा ध्रक हे ।। ध्रक ग्यानी बिना भेद ।।**
**ध्रक बाणी सुखराम क्हे ।। गुर महिमा विन छेद ।।७४।।**

कोई ग्यानी हरीके चर्चाके बिना अन्य मायाके ग्यानकी चर्चा करता उसके चर्चाको धिक्कार है धिक्कार है । तथा जो ग्यानी हरीके प्रगट करनेका भेद छोड्कर अन्य मायाके सभी वस्तु प्रगट करनेका भेद जाणता ऐसे ग्यानीको भी धिक्कार है धिक्कार है । जिसके मुखके वाणीमे मायावी कर्म कांडोकी अंत नही होता ऐसी महिमा है वह गुरुकी महिमा जरासी भी नही है ऐसे मुखके वाणीको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।७४।।

**ध्रक पढीयो ध्रक सीखियो ।। हरी गुण बिना गिनान ।।**
**ध्रक ध्रक सो सुखराम क्हे ।। बिना घट सील सिनान ।।७५।।**

हरी के गुण के ग्यान पढे व सिखे बिना अन्य कितने भी होणकाल के ग्यान पढ लिये व सिख लिये ऐसे सभी पढाई को व सिखनेको धिक्कार है धिक्कार है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि जिसके घट मे शिल नही है व उसका घर व्यभीचार से भरा हुआ घर है ऐसे मनुष्य ने जल से पवित्र होनेके लिये कितने भी पवित्र जल से स्नान किया तो भी उसका स्नान पवित्र होने के लिये व्यर्थ है इसलिये ऐसे व्यभीचारी मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।७५।।

**ध्रक ध्रक सो जाणे घणी ।। ब्रम्ह भेद बिन बात ।।**
**ता सुं ध्रक सुखराम क्हे ।। करे जीव सूं घात ।।७६।।**

सतस्वरुप ब्रम्ह के भेद बिना तीन लोक चवदा भवनकी एक एक बात पुर्ण जाणता है ऐसे जाणकार को ब्रम्ह भेद न जाणणे कारण धिक्कार है धिक्कार है । जो मनुष्य आत्महत्या

करता है या किसी अन्य मनुष्यको आत्महत्या करने को प्रेरित करता है । उनके इस प्रकारके घात करनेके प्रवृत्ती को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ।।७६।।

**धक तामस धक रीसवा ।। जग कुं तज्यो न आय ।।**
**धक श्रवण सुखराम क्हे ।। अनहद सुण्यो न जाय ।।७७।।**

जिस जगत रुपी मायाको अभितक सच्चा मानते रहा व वह जगतरुपी माया झुठी है यह समजा व उस समजपे रिस आई है फिर भी जगतसे मोह ममता तोड्ता नही व जगत को मोह माया से त्यागता नही व सतगुरु को धारण करता नही ऐसे मनुष्य के उस क्रोध को(रिस को)धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जो कान अनहद याने मुख से बोलते नही आती व कागज पे लिखे नही जाती ऐसे अनहद रुपी नाम के ध्वनी को सुणते नही ऐसे कर्णोको धिक्कार है धिक्कार है । ।।७७।।

**धक धक हर बिन कोड हे ।। धक बिन भक्ति चाव ।।**
**धक धक सो सुखराम क्हे ।। हरी गुरू बिन ब्हो भाव ।।७८।।**

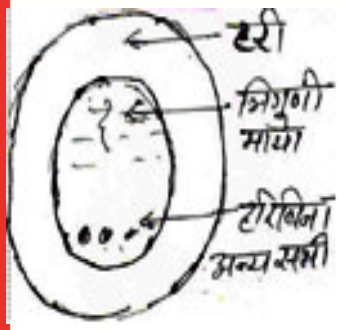


जिसे हरी के बिना अन्य सभी का कोड है व उस हरी के भक्ती शिवा अन्य भक्तिका कोड है चाहणा है ऐसे हर्षको धिक्कार है धिक्कार है । हरी व सतगुरु के बिना तीन लोक चवदा भवन के सभी देवता व गुरुसे बहोत प्रेमभाव है । ऐसे प्रेम भाव को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।७८।।

**धक धक ईमस छो वो ।। चडे करम पर नाय ।।**
**धक चित्त मन सुखराम क्हे ।। पवन गहे नई माय ।।७९।।**

जिसे मायाके सुखोपे नाराजी आयी व साहेब के सुखोकी चाहणा हुअी फिर भी माया के सुख देनेवाले कर्मकांडो पे चढा नही याने कर्मकांडो को रोका नही ऐसे मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है । साहेब की चाहणा होने पर भी चित्तमन से रामनाम के साथ घटमे गहरा सांस भरा नही ऐसे चित्तमन को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।७९।।

**धक धक जो रंग राग हे ।। धक झीणो कंठ होय ।।**
**ता सुंसुण सुखराम क्हे ।। हरजस करे न कोय ।।८०।।**

जिसकी राग रागीणी बहोत अच्छी है व उसका कंठ भी बहोत सुरीला है व ऐसे सुरिले कंठ से राग रंग मे काल के मुखमे रखनेवाले मायावी देवताओके जस गाता परंतु काल से मुक्त करानेवाले हरी के यश नही गाता ऐसे राग रंगमे गाणेवाले कंठ को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।८०।।

**धक धक कंठ हरजस बिना ।। सुणज्यो रे सब कोय ।।**
**धक मन्डळी सुखराम क्हे ।। बिन सिव्रण जो होय ।।८१।।**

कंठ अच्छा है और उस कंठसे हरजसोके याने युग युगसे पडे हुये भ्रम निकालनेवाले व हरी के देशका सुख बतानेवाले ग्यानके पद साखीयाँ गाता नही ऐसे कंठको धिक्कार है धिक्कार है यह सभी जगतके नर नारी सुणो । जहाँ जहाँ मंड्ली जमा होती व वह मंड्ली हरीके स्मरण सिवा हरी न पानेवाली अन्य व्यर्थ बातोमे या राग रागीणीमे रंगते है ऐसे हरीका स्मरण न करनेवाले मंड्लीको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।८१।।

**ज्यां मन्डळी भेळी हुवे ।। भजन बंदगी नाय ।।**
**धक धक सो सुखराम क्हे ।। वा मुर्ख क्यूं जाय ।।८२।।**

जहाँ जहाँ मंड्ली जमा होती है व रात रातभर किर्तन पुजन करते रहती है परंतु हरीका भजन भक्ती नही करती ऐसे सभी जमा होणेवाले मंड्ली को धिक्कार है धिक्कार है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसे मंड्लीमे जानेवाला मनुष्य मुर्ख है इसलिये उस मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।८२।।

**इत उत सूं भेळा हुवे ।। नर नारी सुण लोय ।।**
**धक धक सो सुखराम क्हे ।। सिंव्रण करे न कोय ।।८३।।**

यहाँ वहाँसे नर नारी कोई जगह पे इकठ्ठा होते है । इकठ्ठा होणेपे हरीका स्मरण नही करते व अन्य काल के चक्कर मे डालनेवाली फिजुल बाते करते है ऐसे इकठ्ठा हुये वे हर नर नारी को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।८३।।

**धक धक सो जुग जाणीये ।। जामे नही औतार ।।**
**धक सत्त गुर सुखराम क्हे ।। जे जीव लगे नही पार ।।८४।।**

जिस युग मे भव सागर से तारणेवाले सतस्वरुप संत अवतार नही प्रगटते ऐसे युगको धिक्कार है धिक्कार है । सतगुरु की पदवी लगाकर जगत मे रमते व शिष्य के पिछे शिष्य बनाते परंतु एक भी शिष्य भवसागर से पार नही करा पाते ऐसे सतगुरु नाम का प्रयोग कर जिवको काल के मुख मे अटकाकर रखनेवाले मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।८४।।

**धक धक मंडल देस वो ।। ज्यां पहुँता सन्त न होय ।।**
**धक बस्ती सुखराम क्हे ।। जीव न जागे कोय ।।८५।।**

जीस देशमे या अनेक देशके समुहसे बने हुये मंड्लमे पुर्वके छः व पश्चिमके छः कमल छेदन कर सतस्वरुपमे पहुँचा हुआ संत नही है ऐसे मंड्ल या देशको धिक्कार है धिक्कार

है । ऐसे मंड्ल या देशके जिस बस्तीमे मायासे निकलकर परममोक्षमे जानेके लिये जीव जागृत नही होते ऐसे बस्तीको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।८५।।

**ध्रक नग्र ध्रक स्हेर वो ।। ज्यां मे सती न होय ।।**
**ता सूं ध्रक सुखराम क्हे ।। राम रटे नही कोय ।।८६।।**

उस नगर या शहर को धिक्कार है जिसमे सती याने आनेवाले अतिथी का मान सन्मान करनेवाला और जो कोई जो कुछ भी माँगे तो देणेवाला पुरुष नही रहता और सती याने पतिव्रता स्त्रि नही रहती । उससे भी अधिक धिक्कार उस नगर याने शहर को है जहाँ राम रटनेवाला एक भी हंस नही है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।८६।।

**ध्रक मन्डल ज्यां साध नही ।। ध्रक बस्ती बिन दास ।।**
**ध्रक द्वारो सुखराम क्हे ।। नही भक्त की प्यास ।।८७।।**

जिस बस्ती तथा मंड्ल मे सतस्वरुपी साधु नही है ऐसे बस्ती व मंड्ल को धिक्कार है तथा बस्ती व मंड्ल मे साधु है परंतु एक भी दास याने शिष्य नही है ऐसे दास न बननेके स्वभावको धिक्कार है धिक्कार है । जगत मे भक्ती को रहनेके लिये छोटे बडे अनेक द्वारे बने है परंतु ऐसे द्वारोमे केवली भक्त आवे,ठहरे,ग्यान करे जिवोको भवसागर से पार करे ऐसी उन द्वारोके मालीको में प्यास नही है ऐसे सभी द्वारोके मालीको को धिक्कार है धिक्कार है तथा जिस घर द्वारोमे केवली संतो की प्यास नही है ऐसे सभी घर द्वारोको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।८७।।

**ध्रक ध्रक कुल ध्रक जात वा ।। ज्यां मे संत न होय ।।**
**ध्रक म्हेरी सुखराम क्हे ।। हरी जन जण्यो न कोय ।।८८।।**

जिस कुल तथा जातीमे सतस्वरुपी संत नही है ऐसे कुल व जाती को धिक्कार है धिक्कार है । जिस स्त्री ने हरीजन को जन्म नही दिया ऐसे स्त्री को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।८८।।

**ध्रक ध्रक बस्ती ध्रक गाँव वो ।। ज्यां हरी च्रचा नाय ।।**
**ध्रक घर सो सुखराम क्हे ।। अेक न सुणणे जाय ।।८९।।**

उस गाँव व बस्ती को धिक्कार है जहाँ हरी चर्चा नही होती है तथा उस घर को धिक्कार है जिस घरमे एक भी जीव सतस्वरुपी साधु की संगत सुनने नही जाता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ।।८९।।

**ध्रक ध्रक म्रतक ध्रक हे ।। जे नर रोवे नार ।।**
**ध्रक जामण सुखराम क्हे ।। हर्क न हुवो बिचार ।।९०।।**

मृतक के पिछे जो नर नारी रोते है ऐसे नर नारी तथा मृतक को धिक्कार है धिक्कार है ।

जिसके मनुष्य जन्म पानेकी खुषी नही होती ऐसे मनुष्य के जन्म को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।९०।।

**ध्रक नर जग मे ध्रक हे ।। मूंवा कूं दे बांग ।।**
**ता सुं ध्रक सुखराम क्हे ।। अमल तमाखुं भांग ।।९१।।**

उस मनुष्य को संसारमे धिक्कार है जो मनुष्य मृतक को बांग देकर मतलब नामसे हाक लगाकर रोते है तथा उससे भी अधिक उस मनुष्य को धिक्कार है जो अफीम तम्बाखु भांग सेवन करता है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।९१।।

**ध्रक बस्ती ध्रक बास घर ।। जां हर भक्ती नाय ।।**
**ध्रक मुर्दो सुखराम क्हे ।। पाँव पसाऱ्या जाय ।।९२।।**

जहाँ हरी भक्ती नही ऐसी बस्ती को याने निवास तथा घर को धिक्कार है धिक्कार है जिस मुर्देको बैकुठी बनाकर न ले जाते सिडीपर पाव पसार कर सुलाके ले जाते ऐसे मुर्देको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।९२।।

**ध्रक ध्रक जां घर सोग रे ।। ध्रक बड ले सो नार ।।**
**ध्रक मुवा कूं रोईये ।। सुखदेव तके गिंवार ।।९३।।**

सभी जीव आदिसे पारब्रम्ह होणकाल मे रहते थे । वहाँ सुख दु:ख नही थे । जीवको सुखोकी चाहणा थी । उन चाहणाको ध्यानमे रखते हुये परमात्माने सृष्टी रचना की व हर जीवको अलग अलग मनुष्य देह देकर धरती पे भेजा । इस मनुष्य देहसे पाँच आत्माके सुख ले सके व सुख लेते लेते बडे सुखोके अमर देशमे सहजमे व जल्दीसे जल्द जाते आवे ऐसी जीव पे दया कर देहकी रचना जीवको बना दी । यहाँके सुखमे ज्यादा न रमे व जितने जल्दीसे जल्दी अमर लोक जाते आवे ऐसे साहेब की चाहणा थी । परंतु जीव यहाँ मायामे आनेके बाद बडे सुखके देशमे जानेकी तैयारी न करते यही पे कालके दु:खसे भरे हुये मायाके सुखमें खुब रमता । इस देशमे रमना व जल्दीसे जल्दी महासुखमे जाना इस हेतु को ध्यान मे रखकर जगतमे रमते रमते हाथ से किये हुवे कर्म भोगकर अमर लाक मे पहुँचे इसलिये परमात्मा हर जीव को माया के भी ज्यादासे ज्यादा सुख मिले व कालका दु:ख कमसे कम पडे व जीव जल्दी से जल्दी अमर लोक के सुख मे जावे ऐसे सब सोच विचार कर जिवोको अलग अलग जगह जन्म देता है । जहाँ एक माँ बापसे देह मिलता है उसे हर जीव अपने मोह ममता इस अग्यान के कारण अपना कुल है व सदा रहेंगे ऐसी समज बनाता है । ऐसे कुल मे कोई भी दु:ख पडा तो कुल का हर जीव दुखसे व्याकुल होता है । वह जीव यह नही समजता की मुझे मिला हुआ मनुष्य देह अमर लोक मे जानेके लिये मिला है व यह कुल मेरे कर्मोके लेन देन के बदले भोगकर निर्मल बनानेके लिये मिला है । जैसे परमात्माने किसी एक कुलमे मनुष्य जन्म दिया वैसा वही परमात्मा जिवके जल्दी से जल्दी कर्म काटकर इस कुल से निकालकर जहाँ बदले है वहाँ बदले

चुकाने के लिये भेजते रहता है । ऐसी उसकी भारी कृपा जीव नही समजता उलटा कुलका कोई मनुष्य गुजर जाने पे साई(परमात्मा)को दोषी ठहराता व साईने हमपे बडी क्रुरता की ऐसा समजता व घरके सभी जीव जानेवाले जीव के पिछे रो रो कर दु:ख मनाते व घरकी स्त्रीया रातको ३ बजे उठ उठकर अपने छातीपे मार दे देकर दु:ख मनाते व मरनेवाले की याद कर करके दु:ख मनाते व रातदिन रोते । ऐसे सोग करनेवालो को बड लेनेवाले नारीयोको व मुरदे के पिछे रोनेवाले नर नारीयोको आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज गवार कहते है व मुर्ख कहते है व उन्हे धिक्कार है धिक्कार है ऐसा कहते है ।।।९३।।

**ध्रक आरो ध्रक ब्याव वो ।। ज्हाँ जन जीम्या नाय ।।**
**ध्रक जाती सुखराम क्हे ।। बिन देह देवल जाय ।।९४।।**

हर घरमे शरीर छुटनेके बाद बारवा या तेरवा करते । उस बारवा या तेरवेको राजस्थानी लोक आरा कहते । ऐसे बारवा या तेरवेमे याने आरामे सतस्वरुप संतको बडे आदर के साथ बुलाकर उसकी विधी विधीसे महिमा कर जिमाया नही गया तो वह बारवा या तेरवा यह देह छोड्कर जानेवाले जीव को काल के तापसे मुक्त करनेके लिये फलहीन रहता । इसलिये ऐसे फलहीन बारवे तेरवे को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ऐसे ही विवाह मे सतस्वरुप संत को आदर भावसे बुलाकर उसकी विधी विधी गाजा बाजा के साथ महिमा कर जिमाया नही तो वह विवाह वैवाहिक जिवन मे जो उसके भाग्य मे नही है ऐसे उच्च कोटीके सतस्वरुपी सुख देने मे फलहीन रहता इसलिये ऐसे फलहीन विवाह को धिक्कार है धिक्कार है । जो यात्री जीस देवल मे परमात्मा प्रगट किये हुये संत नही है व मनुष्य ने बनाये हुये मायावी मुर्तीया है उनके दर्शनके लिये कष्ट भोग भोगकर जाता है ऐसे मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।९४।।

**ध्रक तीर्थ ध्रक धाम वो ।। जल बिन ही निवास ।।**
**ध्रक जाती सुखराम क्हे ।। ममता बुझी न आस ।।९५।।**

जिस तिर्थ धाम मे जानेवाले यात्री के लिये पिने के लिये पानी तथा रहनेके लिये निवास नही रहता ऐसे तिर्थधाम को धिक्कार है धिक्कार है तथा वहाँ जानेवाले तिर्थ यात्रीयोकी तृप्त सुखो की ममता आशा मिटती नही उलटी ममता आशा उबरती व यात्री को सताती मतलब यात्रीयोकी ममता आशा मिटानेके लिये ममता आशा मिटानेवाले संत उस तिर्थ पर रहता नही इसलिये ऐसे तिर्थधाम को व तिर्थधाम जानेवाले मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।९५।।

**ध्रक ध्रक भक्त न प्रख ले ।। सत्तगुर करे न कोय ।।**
**ध्रक गुर बिन सुखराम क्हे ।। राम स्नेही होय ।।९६।।**

जो सतस्वरुपी भक्त को परखता नही व परखकर उस सतस्वरुपी भक्त को सतगुरु करता नही ऐसे मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है । घटमे रामनाम प्रगट किये गुरु को धारण करता नही व अपने मतसे ही ने:अंछर याने परमात्मा प्रगट करनेके लिये रामनाम लेता व सभी कोशीश करने पे भी गुरु से भेद न मिलने कारण घटमे परमात्मा प्रगट होता नही ऐसे मनुष्य को धिक्कार है धिक्कार है । जैसे पेड को फल लगता । पेड अपने मुलीयो द्वारा मुलीयो के नजदिकवाले जल प्रवाहसे जल पिता व पिया हुवा पाणी फल को देता व फल को पुर्ण कर रसीला मिठा करता । फल अपने अज्ञान वश यह सोचता की पेड मुलीयोसे पाणी पिता व पिकर मुझे देता ऐसा न करते यह पाणी बराबर मेरे निचे ही है फिर मै उसमे कुदकर पाणी पी सकता व जल्दी मोटा व रसवान हो सकता । इस अज्ञान से फल पेड का आसरा त्याग देता व जलमे कुदी मारकर रसीला बननेकी आशा करता तो रसीला तो नही बनता उलटा सड जाता । इसीप्रकार जो मनुष्य सतगुरु न करते राम सभी मे है फिर मुझमे भी है यह समजकर रामस्नेही बनता पर रामस्नेही बनने पश्चात भी घटके छ:पुर्वके व छ:पश्चिमके कमल छेदकर सतस्वरुप के देश नही जा सकता व माया के पर्चे चमत्कार प्राप्त करता व कालके मुखमे पडा रहता ऐसे मनसेही सोचकर बैठनेवाले रामस्नेहीको धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।९६।।

**कान फुंका गुर हद का ।। वां सु रहे उलझाय ।।**
**तासूं ध्रक सुख राम क्हे ।। सत्तगुर करे न आय ।।९७।।**

मनुष्य देह ४३,२०,००० सालके बाद सतगुरु करके मोक्षमे जानेके लिये बडे मुस्कीलसे मिलता ऐसे एक मनुष्य देहमे आकर घटमे साहेबके पर्चे प्रगट करा देनेवाला सतगुरु नहि करता व कनफुंके गुरु कर माया के घटके बाहरके पर्चे सिखता व सिख सिखकर पर्चे करनेमे उलझ जाता ऐसे शिष्य को धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ।।९७।।

**झूटे गुर सूं लागा रहे ।। ता कूं फिट ध्रकार ।।**
**सत्तगुर कुं सुखराम क्हे ।। समजर तजे गिवार ।।९८।।**

सतगुरु को समजकर भी सतगुरु त्याग देता है व मोक्ष का रास्ता न जाणणेवाले व मायाके पर्चे चमत्कार मे अटकानेवाले झुठे गुरु से लगे रहता है उसे धिक्कार है धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।९८।।

**साचा सत्तगुरू सो सही ।। उलट चडे अस्मांन ।।**
**दूजा सब सुखराम क्हे ।। झूटा गुरू बखाण ।।९९।।**

सच्चे सतगुरु वे समजना जो घटमे बंकनालके रास्तेसे आसमान मे चढ गये है व शिष्य

को भी चढा देते है व सतगुरु बनके बैठे है परंतु बंकनालके रास्ते से आसमान नही चढे या आसमान चढने की विधी नही जाणते वे झुठे गुरु है ऐसा समजो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।९९।।

**हरजी को सिंव्रण करे ।। जन सुं धेक विचार ।।**
**ता कूं ध्रक सुखराम क्हे ।। दर्गा पडसी मार ।।१००।।**

हरीका स्मरण करते है परंतु हरी घटमे पाये ऐसे साधु से द्वेष करते है ऐसे रामनाम रटनेवाले नर नारी को धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१००।।

**भजन भाव भक्ति बिना ।। ध्रक ध्रक क्या नर नार ।।**
**सब पर्ले का जीव हे ।। सुखदेव क्हे विचार ।। १०१ ।।**

रामनाम की भजन भक्ती नही व घटमे रामनाम प्रगट करा देनेवाले सतगुरु से प्रेमभाव नही ऐसे सभी नर नारी को धिक्कार है धिक्कार है । ये सभी जीव प्रलय मे जानेवाले जीव है याने काल के जन्मने व मरणेके चक्कर मे अटके गये जीव है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१०१।।

**।। इति श्री मद भागी ध्रक ध्रक ता को अंग संपूरण ।।**